1-1-196 रिकॉर्ड: लाख जमाने वाले ढोल.... ओम शान्ती प्रात: क्लास

मीठे-2 रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। भल है आसुरी दुनिया के मनुष्यों का बनाया हुआ परन्तु यह भी बाप बैठ तुमको समझाते हैं वो बनाने वाले नही समझ सकते है। तुम जानते हो आसुरी दुनिया के भी विघ्न पड़ते है। दुख सहन करना पड़ता है। फिर भी याद तो आती है नां। याद की यात्रा तरफ खैंचता है हम भी शिव बाबा को नही भूलेगें। कहते हैं बाबा आप भी नही भूलना। जो सर्विसएबुल बच्चे जाती याद करते हैं उनकी याद बाप को भी रहती ही है। बाबा नाम भी लेते हैं। फलाने-2 बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। इससे समझा जाता है ऊंच पद पाने अच्छा पुरूषार्थ करते है। तुम बच्चे समझते हो हम आत्माओं को बाप सुना रहे है। भगवानोवाच्य है नां। बच्चों को निश्चय भी है परन्तु जितना याद और प्यार होना चाहिये उसमें माया विघ्न डालती है। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार ही याद का योग जुड़ेगा। यह अन्दर फुरना लगा रहना चाहिये। हम सतोप्रधान थे। अब फिर सतोप्रधान बनना है। तुम सतोप्रधान बनते हो सतोप्रधान दुनिया में। और जो आत्मायें सतोप्रधान बनती है वो कोई सतोप्रधान दुनिया में नही आवेंगी। प्योर आत्मा को सतोप्रधान तो कहना पड़े। कोई भी नई चीज है तो उसको सतोप्रधान कहेंगें। परन्तु उनके लिये सतोप्रधान दुनिया नही रहती है। तुम जानते हो सतोप्रधान दुनिया में हम सतोप्रधान होंगें। एक सैकिंड में जीवन मुक्ति यह भी अभी का गायन है। आत्माओं को निश्चय हुआ बाबा मिला। बस। बाप कहते है तुम आत्मायें पहले-2 नर्ग में आई फिर 84 जन्म पार्ट बजाया। अब वापस जाना है। इसमें याद की ही मुख्य मेहनत है। ज्ञान तो बहुत इज़ी है। अच्छे-2 भी करते हैं परन्तु जब कि निश्चय बुधी हों इस याद की यात्रा पर चलें। बाप समझाते है कल्प-2 में आकर तुमको नई दुनिया के लिये यह नया ज्ञान देता हूँ। भल है पुरानी परन्तु इस समय तो नया कहेंगें नां। यह है संगम युग। अब वो लोग नया वर्ष मनाते हैं। नई दुनिया में नया वर्ष भी होगा। बताओ तुम्हारा नया वर्ष अभी चल रहा है या चलना है? वो तो पुरानी दुनिया का नया वर्ष मनाते है। तुम्हारी नई दुनिया का नया वर्ष चल रहा है या चलना है? (आने वाला है) उसके लिये अभी तुम्हारा पुरूषार्थ चल रहा है। अभी तुम संगम पर हो। नई दुनिया का नया वर्ष आने वाला है। सतयुग जब शुरू हो तब नया वर्ष चलेगा अभी तो है संगम युग। यह भी सारी दुनिया में किसीको पता नही है सिवाय तुम ब्राह्मणों के। तुम बच्चों में भी बहुत है जो यह भूल जाते है कि यह संगम पुरूषोतम युग है। इस युग में हम उत्तम तें उत्तम पुरूष बनते है। इस दुनिया में भी कोई तो पुरूषोतम होंगें नां। नम्बरवन पहले-2 श्रीकृष्ण को कहेंगें। हां निवृती मार्ग में शंकराचार्य पुरूषोतम था। जिसनें पवित्रता का सन्यास धर्म स्थापन किया। परन्तु वो आपस में फूट कर चार हो गये। अब बाप भी पवित्रता का धर्म स्थापन करते हैं परन्तु इसनें स्थापन किया पुरानी दुनिया में। दवापुर युग में। तुम्हारा तो होता है नई दुनिया में। वो हैं हद के सन्यासी। वो तो अभी फूट कर शंकराचार्य हो गये है। इनकी ट्रस्ट की कमेटी होती है जो आपस में मिल कर किसको स्थापन करते हैं। यह तो राजधानी स्थापन हो रही है। नई दुनिया में नये वर्ष में तुम राज्य करेंगें। तुम हो अभी गुप्त। तुम्हारा पवित्रता पर कितना झगड़ा चलता है। कितना तंग करते है। खान पान पर भी झगड़ा करते है कि प्याज थोम आद खाना ही है। अच्छा हम वैशनव बनना चाहते हैं? विष्णु पुरी को वैश्नव कहा जाता है। अभी तुम वो कलियुग वैष्णव हों। कलियुग में है ही रावण राज्य। रावण राज्य के वैष्णव और रामराज्य के वैष्णव में कितना रात दिन का फर्क है। अभी सारी दुनिया के आद मध्य अन्त का रस्म रिवाज बाप बैठ समझाते है। यह तो तुम जानते हो दुनिया दुशमन बनेगी। यह तुम जानते हो हम गुप्त विश्व पर राज्य स्थापन कर रहे है। हम आत्मा है। अब बाप को याद करना है। बस। यह तुम किसीको भी सुनावेंगे तो सुन कर खुश होंगें। समझेंगें इनको यह नालेज मिलती है स्प्रीचुअल फादर दवारा। और कोई यह नालेज दे नां सके। और कोई ऐसे कह नां सकें। यों तो कहते हैं सभी ब्रदर्स है। यां तो कह देते सभी फादर है। यह नही समझते है कि हम सभी ब्रदर्स का बाप वो एक है। उनसें वर्सा मिलना है। उनकी शिव जयन्ती भी मनाई जाती है। इसका नाम ही है शिव। यज्ञ

भी शिव का गाया जाता है। सिर्फ रूद्र यज्ञ नही है। यह रूद्र आद नाम बहुत रख दिये है। मै अपना नाम शिव ही बताता हूँ। भल शास्त्रों मे रूद्र ज्ञान यज्ञ नाम रख दिया है परन्तु मेरा असल नाम एक ही शिव है। मन्दिर भी शिव का है। रूद्र का मन्दिर वा रूद्र जयन्ति नही कहेंगें। शिव जयन्ती कहा जाता है। भक्ति मार्ग मे भल कितने भी नाम रख देते है परन्तु मेरा नाम एक ही शिव है। तुम हो आत्मायें। तुम्हारा सालीग्राम नाम रख दिया है। हो तुम भी आत्मा हम भी आत्मा। सन्यासी लोग फिर कह देते तुम भी परमात्मा हम भी परमात्मा कितना रात दिन का फर्क है। बाप तो कहते है हम तुम आत्माओं का बाप है इसलिये कह देते है परमपिता परम-आत्मा। माना परमात्मा। जैसे आत्मा तो इनका बाप भी वो ही होगें ना। सभी आत्मायें है। शरीर के होते आत्मा का मर्तबा गिना जाता है। अभी ऊंच ते ऊंच हूँ मै शिव। फिर ऊंच ते ऊंच कहेंगें ब्रह्मा को। मै हूँ आत्माओं का बाप। यह है प्रजा का पिता। यह बातें दुनिया मे कोई नही जानते है। तुम बच्चों मे भी नम्बरवार समझते है। यह नालेज अच्छी रीत धारण करने की है। कोई तुमको पूछने लिये कहेंगें शिव बाबा आया है तुम्हारे लिये तो यह नया जन्म ठहरा। सम्वत भी यह नया मानना चाहिये। क्यों कि तुम हो सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण। चोटी। तो फिर नया वर्ष चोटी से शुरू करेंगे ना। बीच से क्यों शुरू करते हो? परन्तु नही तुमको समझाना है यह संगम युग है। इस समय हम नई दुनिया मे राजाई पाने लिये पुरूषार्थ कर रहे है। वहां सतोप्रधान होंगें। अभी तो सतोप्रधान कोई भी नही है। सिवा एक शिव बाबा के। तुम पुरूषार्थ कर रहे हो सीढ़ी का राज़ भी कितनी अच्छी रीत समझाया जाता है। चढ़ती कला सर्व का भला। तुम्हारी चढ़ती कला कारण सर्व का भला होना है। अब सब काम चितापर बैठ भस्मीभूत हो गये है। तुम सभी से जास्ती सांवरे हो गये हो। काम चिता पर भी पहले-2 तुम चढ़ते हो। अब फिर ज्ञान चिता पर भी तुम ही चढ़ते हो। अब तुम गोरा बनते हो। स्वर्ग मे नैचरल ब्यूटी होती है। यहां तो आर्टीफिशल कितनी फैशन करते है। तुम जानते हो हम ही देवी देवता थे। हमने यह राज्य अनेक बार किया है। हम ही राज्य लेते और गुमाते है। इसमें भी तीन युग सुख मे रहते है। पिछाडी मे दुख होता है। विवेक भी कहता है सुख और दुख इक्वुल हो तो क्या फायदा। जरूर सुख जास्ती होता है। दुख तो बाद मे शुरू होता है। भक्ति मार्ग मे तुम बहुत धनवान रहते हो। बाद मे जब लश्कर आद बढ़ता है तब चढ़ाई करते है। अब तुम बच्चे समझते हो भल वो लोग नया वर्ष मना रहे है। हम तो इन से न्यारे है। तुम तो नई दुनिया से भी इस संगम युग को ऊंच रखते हो। क्यों कि यह है पुरूषोत्तम कल्याणकारी युग। सतयुग त्रेता मे तो कल्याण ही कल्याण है। इस समय तुमको लाटरी मिल रही है। कंगाल को कोई लाटरी मिल जाती है तो खुशी होती है ना। तुमको अब लाटरी मिल रही है। इस लिये अतिइन्द्रिय सुख भी तुमको है। गोप गोपियां तुम हो। ईश्वरीय सन्तान तुम कहलाते हो। वो नही कहला सकते। रचता को जानने से ही रचना की आद मध्य अन्त को जान सकते है। मनुष्य कहते है हम नही जानते। तुम बच्चे जानते हो रचता बाप हमको नोलज दे रहे है। सारे ड्रामा का ज्ञान दे रहे है। बाप पुरूषार्थ करवाते रहते है। तुम बाप दादा के पास बैठे हो। यह खेल बड़ा वण्डरफुल है। तुम कहेंगें हर 5000 वर्ष बाद बाप आकर हमको यह खेल समझाते है। नई बात नही है। तुम अखबार मे भी डाल सकते हो कि शंकराचार्य ने 5000 वर्ष पहले भी भूख हड़ताल की थी। नथिंग न्यू। ड्रामा अनुसार फलाना का गया, 5000 वर्ष पहले भी ऐसा ही हुआ था। अभी तक अजुन अखबार मे मैगजीन आद मे डाला नही है। प्रदर्शनी मे लिखते है तुमने यह 5000 वर्ष पहले भी देखी थी। फिर अब देख रहे हो। तो मनुष्यों की बुद्धि मे आवेगा यह तो गीता की बात बताते है। 5000 वर्ष पहले मुआफिक बेहद के बाप से बेहद का वर्सा फिर से कैसे मिलता है आकर समझो। 5000 वर्ष पहले मुआफिक बाप से राज़ योग सीख कर बेहद का सुख लो विनाश के पहले। ऐसे-2 स्लोगन लिखने चाहियें। कल्प-2 यह प्रदर्शनी हम देखते है। अंग्रेजी अक्षर भी कोई-2 बड़े अच्छे है। यह हिन्दी की भाषा तो बाद मे हुई है। यह अननैचुरल हो गई है। हमारी असली भाषा यह नही थी। अभी तो कितनी भाषायें है। कितने टुकड़े-2

हो गये है। हिन्दुस्तान में। हर एक टुकड़े में भाषा अलग। क्रिश्चन में भी अलग-2 टुकड़े, अलग-2 भाषाये हो गई है। परन्तु इनको समझाने वाला कोई है नही। सब बोधी एक ही धर्म के वो भी आपस में लड़ते रहते है। अभी भी इनकी आपस में लगेगी। बीच में मक्खन तुमको मिलेगा। तुम कोई लड़ाई नही करते हो। तुम तो योग बल से अपने बाप से वर्सा ले रहे हो। मोस्टबिलवेड बाप को याद करना है। कोई-2 कहते है हम तो निरन्तर शिव बाबा को याद करते रहते है। बाबा कहते है यह गपोड़े मारते है। ज्ञान के राज़ को पूरा समझ नहीं सक्ते। निरन्तर याद करना कोई मासी का घर नही। याद को भूल कर ही तो गटर में भी गिर पड़ते है। तुम बच्चे ज—जानते हो दुनिया में क्या-2 होता रहता है। विलायत में भी सब तैयारियां करते रहते है। एक दो के बरखिलाफ बहुत है। यह है वो ही महाभारत लड़ाई। तो जरूर राज योग सिखाने वाला भी होगा। दैवी स्वराज्य की स्थापना भी होगी नां। कहते भी है यह वो ही महाभारत लड़ाई है। परन्तु इसको फिर दवापुर में ले गये है। बुधी में नही आता जरूर भगवान ही राजयोग सिखाने वाले होंगें नां। यह कितनी गुप्त नालेज है। मनुष्य क्या करते रहते है। तरस भी पड़ता है। विचारे घोर अन्धेरे में है। तुमको तो बाबा मिल गया है। जिस रूप में आगे मिला था। उस रूप में ही मिला है। कहा भी है मैं साधारण तन में आता हूं। है भी वो ही। नही तो ब्रहमा कहां से आये। ब्रहमा का बाप कौन? ऐसे तो नही कि विष्णु की नाभी से ब्रहमा पैदा हुआ। नां समझी के कारण क्या क्या कह देते है। है कितनी वन्डर फुल बात। इसमें बाप ने प्रवेश किया है तब बच्चा बना है। यह कोई समझ नां सके कि ब्रहमा का बाप कौन है। ब्रहमा को तो सुक्ष्म वतन में ले जाते है। परन्तु प्रजापिता तो यहां है नां। ब्रहमा के मुख कमल से ब्राहम्ण पैदा हुये। यह भी गुप्त है। बाप ने अपना बनाया, सन्यास कराया और नाम रख दिया। बाप कहते है मैं इनमें प्रवेश करता हूं। मैं ही इनमें आकर स्थापना करता हूं। कृष्ण कैसे करेंगें। कृष्ण की गीता का भगवान होंगे। समझने की बात है नां। ड्रामा अनुसार जिन्होंनें जैसा समझा है वो रिपीट होता रहता है। उसको साखी हो देखना है। तुम ब्रहमा कुमार कुमारियां कहलाते हो इनमें भी कोई सतोप्रधान बुधी है। कोई सतो कोई रजो तमो। देखने में आता है। ऊंच पद भी वो पावेंगें। यह बातें विचार सागर मंथन कर दिल से लगानी चाहिये। कब [illegible]। 5 दिन मुरली नां आवें तो मूंझना नां चाहिये। विचार सागर मंथन कर पुआइन्टस निकाल सक्ते है। ऐसे करते भी है। सवेरे उठ विचार सागर मंथन करते हो आज यह-2 पुआइन्टस भाषण में समझायेंगे। पुआइन्टस भी नोट करनी चाहिये। फिर एक पुआइन्टस से भी [illegible] मुरली चलती जावेंगी। नोट करना अच्छा है। अपनी उन्नती तो करनी है नां। सर्विस पर भी आप ही जाना है। सुना और यह भागें सर्विस पर। तो बाबा भी समझेंगें इनको सर्विस का शौक है। इससे कमाई बहुत होगी। आशीर्वाद से एकदम उड़ जावेंगें। यह बाबा तो बूढ़ा है। तुमतो जवान हो। कुमारियां तो बहुत तीखी जा सकती है। कुमारियों नें इस जन्म में कोई पाप नही किया है। पतित नही बनी है। बाहर में भी मेहनत कर कुमारियों को उठाये रहे है। जिस घर में कन्या नही वो घर सबोना कहा जाता है। बम्बई में कन्याओं का झुण्ड तैयार कर रहे है। बठी बनाई है। बम्बई है मोस्ट फैन्सीकुल। अभी तुम बच्चों को बाप समझाते है अपने को आत्मा समझो। हम आत्माओं को नगों जाना है। देह सहित सब कुछ छोड़ मुझे याद करो। हर एक को अपने लिये पुरुषार्थ करना है। ऐसे कोई मत समझे हम शिव बाबा पर कृपा कर रहे है। ऐसे समझा तो मर पड़ेंगें। यह तो हर एक अपनी जीवन हीरे जैसी बनाते है। बाबा ने समझाया है तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना है। मीठे बाप के बच्चे बने हो। बाप प्यार का सागर है नां। कब भी कड़वा नही बनना चाहिये। बहुत मीठा। मीठे बाप के मीठे बच्चे बनना है। जिन में लव नही वो जैसे बन्दर है। भक्ति मार्ग है हीबन्दर मार्ग। गीता में कहा है आसुरी सम्प्रदाय यह है। पूछना चाहिये कि यह किसके लिये भगवान नें कहा कि यह आसुरी सम्प्रदाय है। अभी तो बरोबर रावण राज्य है नां। तब ही बाप नें कहा था। हम भी कहते है। हम भी पहले आसुरी राज्य में थे। अभी हमको ईश्वर पढ़ा रहे है। हम ईश्वरिय सम्प्रदाय में है। बाकी है आसुरी सम्प्रदाय। परन्तु युक्ति से समझाना है। ओम